भक्ति काल के कवि

हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ विरासत

स्वामी विवेकानंद महिला कॉलेज, रूपनगढ़

व्याख्याता – हिंदी साहित्य: विजयलक्ष्मी कुमावत

बी.ए. प्रथम वर्ष | सेमेस्टर – द्वितीय

Made with GAMMA

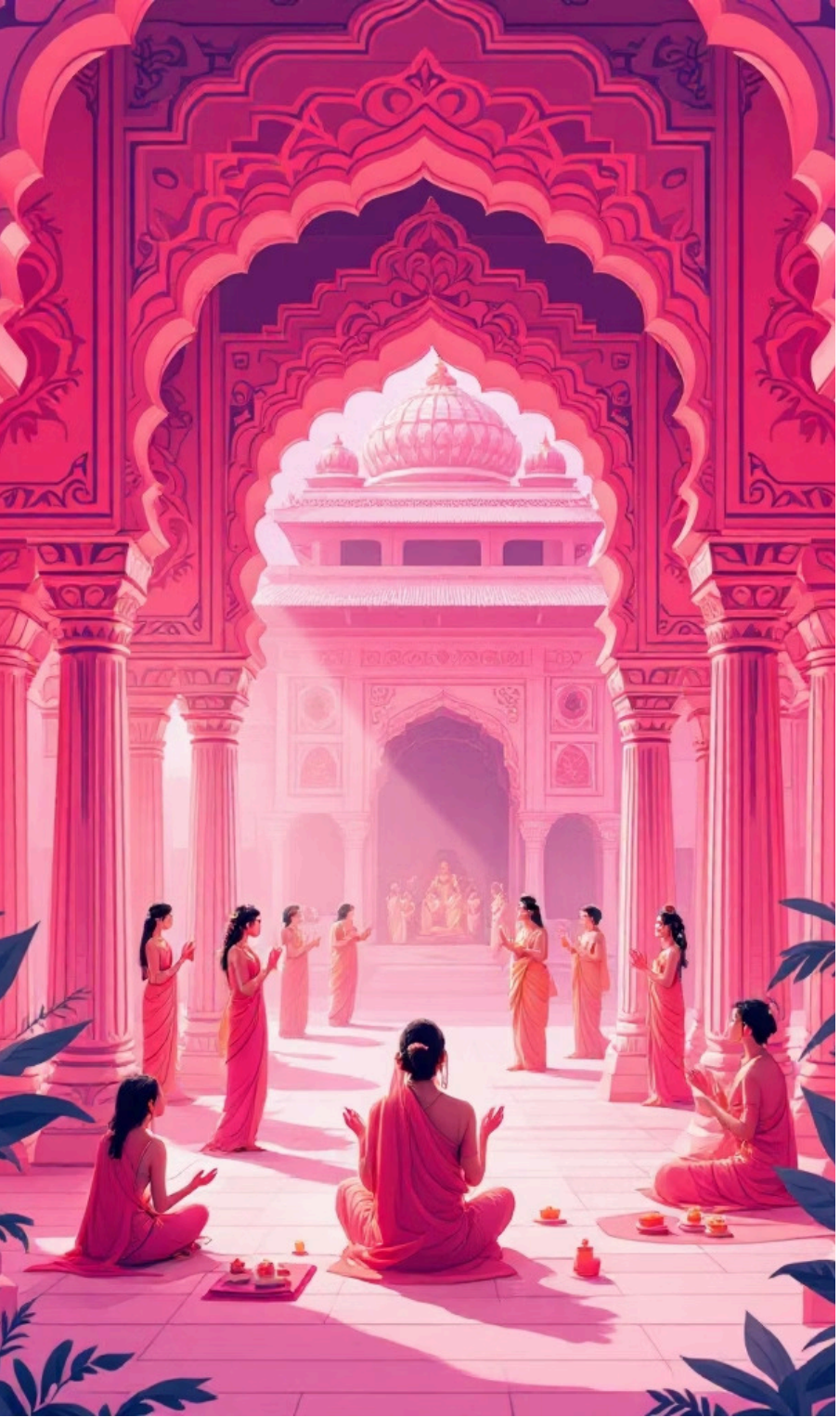

भक्ति काल का परिचय

01

कालखंड

14वीं से 17वीं शताब्दी तक चला

02

सामाजिक प्रसंग

जाति-प्रथा और धार्मिक कठोरता के विरुद्ध

03

मुख्य विचार

ईश्वर की भक्ति और प्रेम मार्ग

04

साहित्यिक रूप

ध्रुपद, पद, साखी, दोहे में अभिव्यक्ति

Made with GAMMA

भक्ति काल की प्रमुख विशेषताएँ

भक्ति भावना

ईश्वर प्रेम और सर्वोपरि भावना

सामाजिक समानता

जाति-पाँति के भेदभाव का विरोध

देशज भाषा

खड़ी बोली, ब्रज, अवधी में रचनाएँ

सांगीतिकता

राग-रागिनी के साथ गायन

नैतिक शिक्षा

सदाचार, सच्चाई और प्रेम का संदेश

दो संप्रदाय

सगुण और निर्गुण उपासना पद्धति

Made with GAMMA

कबीरदास – जीवन और काव्य

जीवन परिचय

- जन्म: 1398 ई., वाराणसी
- गुरु: रामानंद
- मृत्यु: 1518 ई.

काव्य विशेषताएँ

- साखी और दोहे में व्यंजना
- सगुण-निर्गुण का समन्वय
- सामाजिक आलोचना

प्रमुख रचनाएँ

बीजक, साखा, रमैनी

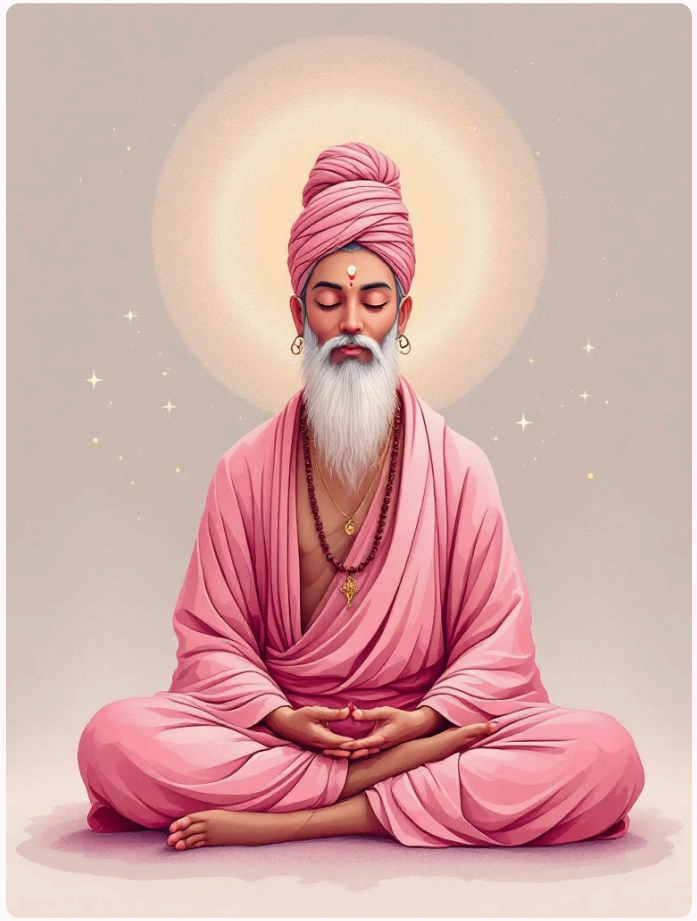

Made with GAMMA

सूरदास – जीवन और काव्य

जीवन परिचय

जन्म: 1483 ई., मथुरा। अंधा कवि था। वैष्णव संप्रदाय से संबद्ध।

काव्य विशेषताएँ

भावुक और रसपूर्ण भक्ति। श्रृंगार रस का प्राधान्य। ब्रजभाषा में रचनाएँ।

प्रमुख रचनाएँ

सूरसागर (5000 पद), साहित्य रत्नावली

Made with GAMMA

तुलसीदास – जीवन और काव्य

जीवन परिचय

- जन्म: 1532 ई., राजापुर
- श्रीराम के प्रेमी भक्त
- मृत्यु: 1623 ई.

काव्य विशेषताएँ

- अवधी भाषा में रचनाएँ
- मानवीय मूल्यों पर जोर
- राम कथा का लोकप्रियीकरण

प्रमुख रचनाएँ

रामचरितमानस, विनय पत्रिका, दोहावली

Made with GAMMA

मीराबाई – जीवन और काव्य

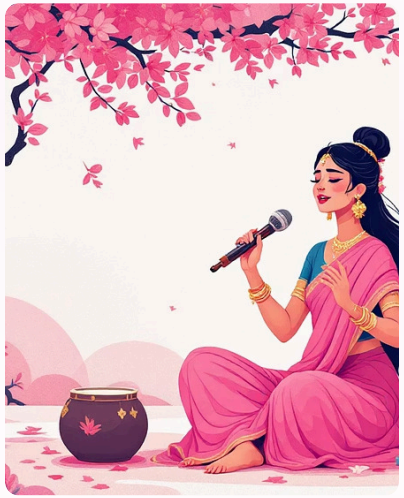

जीवन परिचय

जन्म: 1498 ई., मेवाड़। राजपूत राजकुमारी। श्रीकृष्ण की परम भक्त।

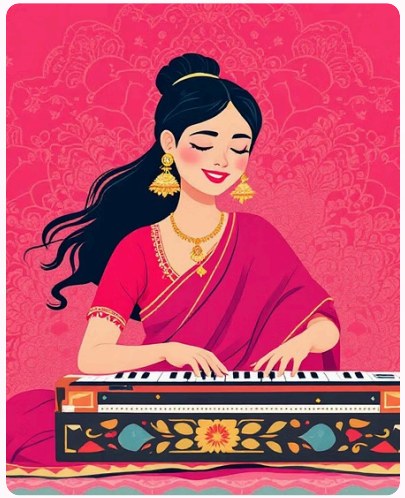

काव्य विशेषताएँ

पद और भजन रचना। प्रेम मार्ग की अभिव्यक्ति। भक्ति की सामाजिक स्वीकृति।

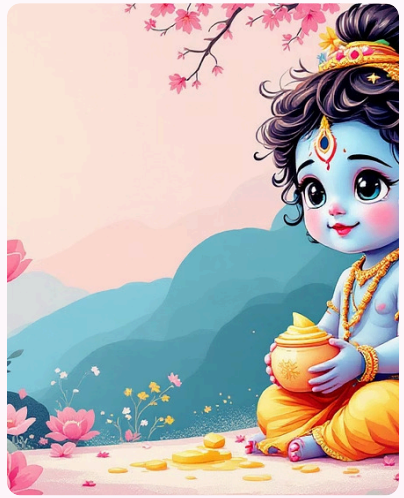

प्रमुख रचनाएँ

1000 से अधिक पद। गिरधर गोपाल श्रीकृष्ण का नाम।

Made with GAMMA

भक्ति काल के अन्य प्रमुख कवि

नामदेव

मराठी भक्त। सगुण उपासना। अमृतानुभव।

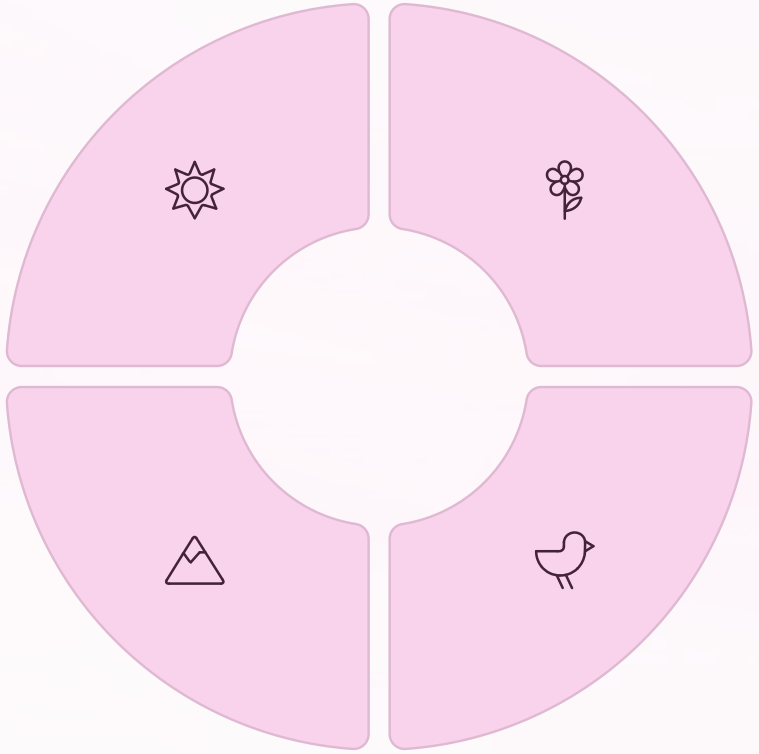

रैदास

चमार जाति। रामानंद के शिष्य। सामाजिक समानता।

नरसिंह मेहता

गुजरात। राधा-कृष्ण भक्ति। गुजराती काव्य।

दादूदयाल

गुजरात। सगुण-निर्गुण का समन्वय। दादू पंथ।

Made with GAMMA

हिंदी साहित्य में भक्ति काल का महत्व

साहित्यिक विकास

देशज भाषाओं को साहित्यिक मान्यता। विविध छंद और रीतियाँ।

सामाजिक सुधार

जाति-प्रथा के विरुद्ध आवाज। समानता और भाईचारे का संदेश।

धार्मिक स्वतंत्रता

पुरोहितवाद के विरुद्ध। सीधा संबंध ईश्वर से।

सांस्कृतिक विरासत

लोक संगीत और कथाओं का साहित्यिकीकरण।

Made with GAMMA

निष्कर्ष

भक्ति काल

हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग। जन-जन का साहित्य।

संदेश

प्रेम, समानता और सदाचार की शिक्षा।

प्रभाव

आधुनिक साहित्य पर स्थायी प्रभाव।

> "भक्ति काल के कवियों ने भावना और विचार का सुंदर समन्वय किया और हिंदी साहित्य को अमरत्व प्रदान किया।"

Made with GAMMA